ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /108

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक मूल्य

आर्येन्द्र त्रिपाठी
शोध छात्र शिक्षा शास्त्र विभाग
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय गजरौला अमरोहा उत्तर प्रदेश
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.154

सारांशः

स्वामी विवेकानंद भारतवर्ष के उन अमर सपूतों में से हैं जिनकी कीर्ति अखिल विश्व का निरंतर आलोकित कर रही हैं। उनके आध्यात्मिकता की गहराई तथा संपूर्ण मानव जाति के प्रति उनका प्रेम हमारे देश की धरोहर हैं। स्वामी विवेकानंद भारतीय दर्शन के पंडित अद्वैत वेदांत को व्यवहार रूप देने के लिए ख्यातिलब्ध हैं। स्वामी जी अपने देश के नागरिकों की अशिक्षा और निर्धनता से बहुत व्यथित थे। इसे दूर करने के लिए उन्होंने शैक्षिक उन्नयन हेतु अथक प्रयास किया। स्वामी जी के अनुसार ज्ञान के दो रूप हैं वस्तु जगत का ज्ञान और आत्क का तत्व का ज्ञान, मनुष्य को इन दोनों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। उनका मानना था कि जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मानुभूति या मोक्ष हैं। आत्मानुभूति के लिए भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग आवश्यक हैं। वह भारत में ऐसी व्यवस्था चाहते थे जिससे व्यक्ति चरित्रवान और आत्मनिर्भर बने तथा प्रयोग के आधार पर सिद्ध ज्ञान को प्राप्त करें जो उसके बहुआयामी उत्थान में सहायक बने।

शब्द संकेत : आत्मतत्व , भक्तियोग , चरित्रवान , आत्मनिर्भर , शाश्वत , मुक्ति , उभयभाषियों , पुनरावृत्ति , प्रशिक्षित।

भूमिका : भारत संस्कृति सभ्यता कला ज्ञान की दृष्टि से समृद्ध रहा है। यहा की भव्य संस्कृति और भारतीय शिक्षा पद्धति का संपूर्ण विश्व ने सम्मान किया है। इसलिए भारत को विश्वगुरू भी कह कर पुकारा गया है। यह वह भारत है जो संपूर्ण विश्व का सिरमौर था, सारे संसार के लोग भारत के ऋषि मुनियों के चरणों में बैठकर ज्ञान विज्ञान और चरित्र की शिक्षा प्राप्त किए। यह वही भारत भूमि हैं जहां उमड़ती हुई बाढ़ की तरह धर्म तथा दार्शनिक तत्वों में चमक संसार को बार–बार प्लावित कर दिया। विष्णु पुराण में भारत की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि "गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तुते भारत भूमि भागे" अर्थात देवगण भी निरंतर यही गान करते हैं कि वे पुरूष धन्य हैं, जिन्होंने स्वर्ग और अपवर्ग के मार्गस्वरूप भारतवर्ष में जन्म लिया है और यह वही भारत भूमि है जहां से पुनः ऐसी तरंगे उठकर निस्तेज जातियों में शक्ति , गर्व और जीवन का संचार करती है। यह वही भारत है जो शताब्दियों तक होने वाले विदेशियों के शत–शत आक्रमण को सहकर भी अक्षय बना हुआ है। यह वही भारत है जो अपने अविनाशी वीर्य और जीवन के साथ अब तक पर्वत से भी दृढ़तर भाव से खड़ा है आत्मा जैसे अनादि अनंत और अमृत स्वरूप है वैसे ही हमारे भारत भूमि का जीवन है और हम इसी देश की संतान है।

भारत में शिक्षा का अभ्युदय आज से सहस्रों वर्ष पूर्व हुआ है हमारे देश के मनीषी इस बात से भलीभांति परिचित थे कि सभ्यता का बहुमुखी विकास शिक्षा से ही किया जा सकता है अतः उन्होंने ऐसी शिक्षा प्राणाली का प्रतिपादन किया जिससे भारत का मस्तक आज भी गर्व से उन्नत है शिक्षा ही ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनोकामनाओं की पूर्ति की जा सकती है। शिक्षा से ही व्यक्ति को ज्ञान तदनंतर मुक्ति प्राप्त होता है।

शिक्षा दर्शन : स्वामी विवेकानंद जी का मानना है कि शिक्षा ही किसी राष्ट्र की आतंरिक उन्नति का दर्पण है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्राचीन संस्कृति को दर्शाती है भारत के वनों और आश्रमों मे जिस संस्कृति का विकास हुआ आज भी उसका प्रतिबिंब विश्व के समक्ष आलोक स्तम्भ की भाति दीप्त हो रहा है शिक्षा यहा सदा से आलोक का साधन रहा है जो कि हमें जीवन के पथ पर आगे ले जाता है। वैदिक आचार्यों ने बहुत पहले ही यह जान लिया था कि "ऋृते ज्ञानान्न मुक्तिः" अर्थात ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है। भगवद् गीता में भी श्री कृष्ण कहते हैं कि "सर्वकर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते" (4/33) एवं उन्होंने यह भी कहा है कि "न हि ज्ञानेन सदृशंपवित्रमिहविद्यते" (4/38) इससे ज्ञान की महत्ता की सनातन भारतीय मनीषा में प्रतिष्ठा सुस्पष्ट होती है अतः शिक्षा को व्यापक बनाया गया और जीवन के प्रत्येक अंग से उसे संबंधित कर दिया गया। स्वामी जी के विचारों में मानवता के प्रति प्रेम एव अध्यात्म की भावनाएं दृष्टिगोचर होती है। स्वामी जी भारत में ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे व्यक्ति सच्चरित्र और स्वावलंबी बने स्वामी जी के शब्दों में हमें ऐसी उच्च शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।

स्वामी जी सैद्धांतिक शिक्षा की तुलना में व्यावहारिक शिक्षा पर बल देते थे उनके शब्दों में तुमको कार्य के सब क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा सिद्धांतो के ढेरो ने संपूर्ण देश का विनाश कर दिया है। स्वामी जी मैकाले द्वारा प्रचारित तत्कालीन अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को सही नही मानते थे क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य मात्र लिपिकों और उभयभाषियों को उत्पन्न करना था।

उपयोगिता : भारतवर्ष प्राचीन काल से ही एक आध्यात्मिक देश रहा है। वस्तुतः आज भी इसके मूल चेतना में आध्यात्मिकता की झलक दिखाई दे रही है। हमारे देश के पुनर्निर्माण में शाश्वत मूल्य ही सहायक सिद्ध हो सकते है अनुसंधान के आधार पर नित नवीन वैज्ञानिक तथ्यों सामान्य नियमों तथा सिद्धांतो की रचना होती रहती है तथा पूर्व स्थापित सिद्धांतो की पुनरावृत्ति तथा पुष्टि नवीन उपकरणों तथा नवीनतम विकसित विधियों द्वारा होती रहती है। स्वामी विवेकानंद मानवता के प्रहरी हैं तथा मानव मात्र को बंधनों से मुक्ति दिलाने के लिए शिक्षा का आवश्यक मानते हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संपूर्ण विश्व के राष्ट्रों को अपने शैक्षिक प्रयासों को विस्तीर्ण बनाना होगा।

अधिक सुविधाएं जुटानी होंगी अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षित करना होगा, नवीन पाठ्यक्रम का विकास करना होगा और शिक्षण हेतु नवीन सामग्रियां जुटानी होगी। स्वामी विवेकानंद का हृदय असहाय दीन हीन निर्धनों एवं पीड़ितों की पीड़ा से द्रवित होता था। उनके अनुसार यदि निर्धनों एवं शूद्रों को राष्ट्र की मुख्य धारा से नहीं जोड़ा गया तो किसी का कल्याण संभव नहीं है। उन्होंने बाल विवाह को सामाजिक प्रगति मे बाधक और लैंगिक विभेद के लिए उत्तरदायी ठहराया तथा शिक्षा के व्यवहारिक पक्ष को समर्थन दिया।

निष्कर्षः स्वामी विवेकानंद का दर्शन अत्यंत उच्च कोटि का है उन्होंने लोगों से अपनी संस्कृति को बचाए रखने हेतु भारतीय संस्कृति के मूल अस्तित्व को बनाए रखने का आह्वान किया। स्वामी जी युगद्रष्टा के साथ युगस्रष्टा भी थे। वह अद्वैत वेदांत के प्रबल समर्थक थे। स्वामी विवेकानंद जी नें उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत, क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गपथपस्त्त कवयोवदन्ति, कठोपनिषद् के इस श्लोक को आदर्श रूप में अंगीकार करते हुए जीवन मे आत्मसात किया, जिसका अर्थ है उठो जागों और श्रेष्ठ पुरूषों के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करों। विद्वान मनीषी जनों का कहना है कि ज्ञान प्राप्ति का मार्ग उसी प्रकार दुर्गम है जिस प्रकार तीक्ष्ण किए गए छूरे के धार पर चलना । स्वामी विवेकानंद के चिंतन का केन्द्र बिन्दु वेदांत जीवन और जगत के विविध क्षेत्र दर्शन, आध्यात्म , समाज , मनोविज्ञान , राजनीति , अर्थनीति , राष्ट्रीयता अंतर्राष्ट्रीयता, संबंधी विचार वेदांत से अनुप्राणित है।

संदर्भ ग्रंथ

1. सिंह डाक्टर ओपी शिक्षा दर्शन शास्त्री शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 64
2. स्वामी विवेकानंद : स्वामी विवेकानंद और उनका अवदान प्रकाशन बोध सारानंद , अद्वैत आश्रम कोलकाता 2008 पृष्ठ संख्या 147
3. वर्मा डॉक्टर आर एस शिक्षा में नव चितन अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ संख्या 17
4. पाठक एवं त्यागी– शिक्षा के सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पृष्ठ संख्या 119
5. पाण्डेय डॉक्टर गौरी शंकर– शिक्षा संवाद 2007 जनवरी से जून पृष्ठ संख्या 81
6. रूहेला प्रोफेसर एस0पी0 विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा 2008 पृष्ठ संख्या 261
7. चौधरी रामखेलावन– भारतीय शिक्षा की समस्यायें, हिन्दी साहित्य भंडार लखनऊ पृष्ठ संख्या 63
8. स्वामी विवेकानंद और जॉन ड्यूवी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं 21वीं शताब्दी में उनकी शैक्षिक प्रासंगिकता डॉ0 आदित्य नारायण त्रिपाठी पृष्ठ संख्या 78
9. आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा शिक्षा प्रक्रिया में सर्वांगीण परिवर्तन की आवश्यकता हरिद्वार ब्रह्मवर्चस शांतिकुंज वर्ष 1991 पृष्ठ सं0–9
10. गुप्ता बाबूराम, कुछ महान शिक्षक कैलाश प्रकाशन इलाहाबाद 1982 पृष्ठ संख्या 56